मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी चेतना का अध्ययन।

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी हेतु शोध प्रबंध

की डिग्री के लिए आंशिक पूर्ति

में जमा किया गया

पीएचडी [हिंदी] सारांश

शोध निर्देशिका

JV'n डॉ. चित्रा

शोधार्थी

JV'n ऋषिभा लाम्बा

नामांकन संख्या: JVR-I/22/10059

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

प्रबंधन एवं मानविकी संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

2023

अनुक्रमणिका

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
पाठ-१	परिचय	1-7
पाठ-२	सम्बंधित साहित्य की समीक्षा	8-35
पाठ-३	अनुसंधान के उद्देश्य	36-37
पाठ-४	अनुसंधान क्रियाविधि	38-39
---	संदर्भ ग्रन्थ सूची	40-46

पाठ १

परिचय :

महिलाएं पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं- उन्हें सशक्त बनाने की जरूरत है। यह दर्दनाक सच्चाई बहुत ही लंबे समय से अस्तित्व में है। यह हाल के वर्षों में है कि महिलाओं को तुच्छता और शक्तिहीनता के धरातल से बाहर निकालने के लिए ध्यान देने योग्य काम शुरू हुआ। पितृसत्तात्मक समाज ने दुनिया भर में महिलाओं की स्वतंत्रता को दबा दिया। महिलाओं को मतदान करने की अनुमति नहीं थी और यहां तक कि कोई राय भी पेश करने की अनुमति नहीं थी।

महिलाएं अपने घरों तक ही सीमित थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उन्होनें महसूस किया कि उनके जीवन का मतलब केवल घर में सेवा करने से कहीं ना कहीं अधिक है। जैसे - जैसे अधिक से अधिक महिलाओं ने मानव निर्मित बाधाओं को पार करना शुरू किया, दुनिया अब महिलाओं के उत्थान के लिए गवाह बनाने लगी। पुरुषों के विपरीत, महिलाएं कभी भी अपने विपरीत लिंग की आवाज को दबाने की कोशिश नहीं करती हैं। वे सभी पद दलित लोगों - पुरुषों और महिलाओं दोनों का हाथ पकड़ते हैं और वे उन्हें दुर्भाग्य से बाहर निकालते हैं क्योंकि वे अपने जीवन को और बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं।

प्राचीन दिनों में और यहां तक कि हाल के दिनों में, सैकड़ों देशों में महिलाओं को मतदान करने की अनुमति नहीं थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया, अधिक से अधिक महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ। महिलाओं के मतदान के अधिकार के समर्थन में प्रतिदिन कई मताधिकार आंदोलन चलाए गए।

कोई भी महिला तब तक सशक्त नहीं हो सकती जब तक कि वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है। वे दिन गए जब महिलाओं को अपनी मनचाही चीजों को पाने के लिए अपने पिता या पति पर निर्भर रहना पड़ता था। २०वीं शताब्दी के बाद से महिलाओं को कार्यबल में शामिल होने के अधिक अवसर मिले। कई महिलाओं को परिवार का भरण-पोषण करने के लिए कार्यस्थल और घर दोनों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। आज महिलाओं के लिए भी अधिक से अधिक नौकरियां खुल रही हैं। महिलाएं उन्हें सौंपी गई उपाधियों के योग्य साबित हो रही हैं।

घर में भी, महिलाओं ने महत्वपूर्ण निर्णय लेने की शक्तियाँ प्राप्त की हैं। बच्चा पैदा करना या न करना अब पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा तय किया जाता है। गर्भनिरोधक गोलियों के प्रयोग ने महिलाओं को और अधिक सशक्त बना दिया है।

महिलाएं अब निर्बाध कामकाजी जीवन और शिक्षा का आनंद ले सकती हैं। अगर समाज के निचले पायदान की महिलाएं सशक्त नहीं होंगी तो महिलाएं सफल नहीं हो सकतीं।
21वीं सदी की शुरुआत के बाद, जमीनी स्तर की महिलाओं ने कई व्यावसायिक कार्य, मजदूर पाए हैं जो केवल पुरुषों के लिए आरक्षित थे। आज कई महिला राजमिस्त्री, बस ड्राइवर, पेट्रोल पम्प अटेंडेंट, किसान आदि हैं और ये सभी महिलाएं अपना काम बहुत अच्छे से कर रही हैं।

"सशक्त नारी
सशक्त समाज"

मृदुला गर्ग का परिचय

मृदुला गर्ग (जन्म 1938) एक भारतीय लेखिका हैं जो हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में लिखती हैं। उन्होंने हिन्दी में 30 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं - उपन्यास, लघु कहानी संग्रह, नाटक और निबंध संग्रह - जिनमें कई अंग्रेजी में अनुवादित हैं। वह साहित्य अकादमी पुरस्कार की प्राप्तकर्ता हैं। गर्ग का पालन-पोषण दिल्ली में उसके माता-पिता ने छह बहनों के साथ किया, और जब वह बच्ची थी तब उसने कहानियां लिखना शुरू किया। उन्होंने 1960 में अर्थशास्त्र में परास्नातक पूरा किया और तीन साल तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र पढ़ाया।

उन्होंने 1975 में अपना पहला उपन्यास, उसके हिस्से की धूप प्रकाशित किया। 1979 में उनके उपन्यास चितकोबरा के प्रकाशित होने के बाद उन्हें अश्लीलता के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, एक मामले में जो दो साल तक बढ़ा लेकिन जेल नहीं हुई। उनके कई कार्यों में नारीवादी विषय हैं, और उन्होंने 2010 में द हिन्दू को बताया "मेरा लेखन नारीवादी नहीं है। नारीत्व के रूपकों में से एक अपराधबोध है, चाहे वह यौन मामलों

में हों, कामकाजी महिला में या गैर- कामकाजी में। मेरी महिलाओं को कभी कोई अपराधबोध महसूस नहीं हुआ। इसने पंख फड़फड़ाए। हमारे पास सेरेब्रल भाग और गर्भ है, जो आपको घेरता है और सशक्त करता है, लेकिन साथ ही आपको कसता भी है। मेरी तरह का नारीवाद याद है कि हर महिला अलग हो सकती है।"

वह एक स्तंभकार रही हैं, पर्यावरण, महिला मुद्दों, बाल सेवा और साहित्य पर लिखती रही हैं। उन्होंने 1985-1990 के बीच पाँच वर्षों के लिए कोलकाता से रविवार पत्रिका में एक पाक्षिक स्तंभ, परिवार लिखा और 2003 और 2010 के बीच 7 वर्षों के लिए इंडिया टुडे (हिंदी) में एक अन्य स्तंभ कटाक्ष (व्यंग्य) लिखा। जर्मन, चेक, जापानी और अंग्रेजी जैसी भारतीय और विदेशी भाषाओं की संख्या। वह अप्रैल 1990 में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया बर्कले यूएसए में सेंटर फॉर साउथ एशियन स्टडीज में एक शोध सहयोगी थीं। उन्हें तत्कालीन ही यूगोस्लाविया में विश्वविद्यालयों और सम्मेलनों में हिन्दी साहित्य और आलोचना, और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव पर बोलने के लिए आमंत्रित किया गया था। यूएसए (1990 और 1991) और इंटरलिट-3, जर्मनी (1993) के प्रतिनिधि थे। उसे और जापान (2003), इटली (2011) में आमंत्रित किया गया था।

मृदुला गर्ग के लोकप्रिय लेख

लोकप्रिय उपन्यास

१. उसके हिस्से की धूप - 1975
२. चितकोबरा - 1979
३. अनित्य - 1980
४. मैं और मैं - 1984
५. कठ-गुलाब - 1996
६. मिलजुल मन - 2010
७. वसु का कुटुम - 2016
८. वंशज - 1976

लघु कथाएं

१. कितनी क़ैदेन - 1975
२. टुकड़ा-टुकड़ा आदमी - 1976
३. डैफोडिल जल रहे हैं - 1978
४. ग्लेशियर से - 1980
५. उर्फ़ सैम - 1986
६. शहर के नाम - 1990
७. समागम - 1996
८. मेरे देश की मिट्टी, अहा - 2001

संगति - विसंगति (२ खंड में) (2004)
जूते का जोड़ा गोभी का तोड़ (2006)
मेरे संग की औरतें (2013)

निबंध

रंग - ढंग 1995
कुछ अटके कुछ भटके (1996)
छूटते नहीं सवाल (1999)
कर लेंगे सब हज़म
कृति मैन स्त्री पात्र (2010)
कृति और कृतिकार (2013)

प्ले

एक और अजनबी (1978)
जादू का कालीन (1993)

नाटक एवं शॉर्ट स्टोरीज

टीन काइडेन (1995)
चर्चित कहानियां (1993)

साम दाम दंड भेद - बच्चों के लिए खेलों (2003)

पाठ २
सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

श्रीमती प्रभा खेतान -

हिन्दी साहित्य के जगत में श्रीमती खेतान का अत्याधिक योगदान रहा है। श्रीमती खेतान नारी के मुद्दों के प्रति संवेदनशील रही है। इसलिए उनका काम मुख्य रूप से नारी के मुद्दों पर रहा है। उन्होंने नारीयों के अधिकारों और सशक्तिकरण पर कई उपन्यास लिखे है। श्रीमती खेतान ने जोर देकर कहा कि नारीयों को सम्मान के साथ जीने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता आवश्यक है जो उसकी क्षमता को दर्शाता है। वह स्वयं भी अपने जीवन काल में एक बहादुर महिला रही है। श्रीमती खेतान ने अपने साहित्य में इस बात पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है कि कैसे नारीयाँ विश्व स्तर पर विभिन्न प्रकार की चुनौतियां और समस्याओं का सामना करती है।

श्रीमती खेतान नारीयों की स्वतंत्रता में दृढ़ विश्वास रखती थीं और दमन का समर्थन नहीं करती थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में उपन्यास लेखन, अनुवादक, कवि और प्रकाशक आदि के रूप में योगदान दिया है। उनका अधिकांश योगदान विश्व स्तर पर नारीयों से संबंधित चिंताओं और विशेष रूप से भारत में नारीयों के सामने आने वाली सभी

कठिनाइयों और चुनौतियों पर रहा है। उनके उपन्यास हैं - अपने अपने चेहरे, तालाबंदी, आओ पेपे घर चले, छिन्नमस्ता, एड्स, अग्निसंभवा, पीली आंधी, तथा स्त्री पक्ष आदि।

श्रीमती रवेतान का "आओ पेपे घर चले" पहला प्रकाशित उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने एक अमेरिकी महिला की जीवन गाथा का वर्णन किया है। लेखिका ब्यूटीशियन थेरेपी का कोर्स करने के लिए अमेरिका गई थीं। अमेरिका प्रवास के दौरान उनके अनुभवों को इस साहित्य में वर्णित किया गया है। इस उपन्यास में उन्होंने अमेरिकी समाज में महिलाओं की चिंताओं और चुनौतियों का वर्णन किया है और जीवन में शून्य नैतिक मूल्यों के साथ सहानुभूति और करुणा के बीच किसी भी संबंध के बिना सुख और धन की खोज में सांसारिक मामलों का अंधानुकरण किया है।

तालाबंदी उपन्यास में श्रीमती रवेतान ने मारवाड़ी समुदाय की समाज की व्यावसायिक स्थिति के बारे में वर्णन करता है और उनके मानसिकता के मुद्दों पर केंद्रित है। इस उपन्यास में उन्होंने मालिक और मजदूर के बीच के संबंधों को चित्रित करने और उनमें एकरूपता लाने की कोशिश की है साथ के साथ स्वतंत्रता के बाद के युग में समानता के लिए जोर दिया है।

छिन्नमस्ता उपन्यास श्रीमती खेतान का प्रसिद्ध और सबसे चर्चित उपन्यासों में से एक रहा है। यह उपन्यास आधुनिक मूल्यों और व्यवस्थाओं पर विचार करता है। छिन्नमस्ता उपन्यास में प्रिया को एक मुख्य पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। यह प्रिया की शादी के बाद उसके सामने आने वाली कठिनाईयों और अकेलेपन की स्थितियों पर आधारित है। हालाँकि, प्रिया अपने रास्ते में आने वाली सभी चुनौतियों का सामना करती है और सम्मान के साथ एक बहुत ही सफल जीवन जीती है। इसलिए यह उपन्यास सभी महिलाओं को अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए सकारात्मक और आशावादी होने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है।

अपने अपने चेहरे उपन्यास में श्रीमती खेतान ने मारवाड़ी समुदाय के परिवारों की नारियों और उनकी जीवन शैली, खान-पान और संस्कृति आदि को दर्शाया गया है। नारीत्व का मूल आधार केवल परिवार, विवाह, पति, बच्चे आदि पर आधारित नहीं है, बल्कि यह अलग हो सकता है और श्रीमती खेतान अपने उपन्यास के माध्यम से शिक्षित करती है कि एक महिला का प्राथमिक लक्ष्य पति ही नहीं है बल्कि इन सब बंधनों से खुद को स्वतंत्र होने के लिए सशक्त बनाना है।

श्रीमती श्वेतान ने पीली आंधी उपन्यास को ब्रिटिश काल में लिखा था। यह उपन्यास समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था को न टूटने देने की ज़िद के लिए आपस में लड़ते झगड़ते महिलाओं की कहानी है।

श्रीमती श्वेतान ने एड्स उपन्यास में एक वैवाहिक जीवन के दौरान नारी अपने जीवन साथी के प्रति ईमानदार और प्रतिबद्ध होने के बावजूद भी उसके जीवन में अकेलेपन और पीड़ा के बारे में खूबसूरती से करुणा का वर्णन करती है।

स्त्री पक्ष उपन्यास में श्रीमती श्वेतान ने सभी महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता पर जोर दिया है। पूर्ण सशक्तिकरण के साथ महिलाओं के आत्म-विकास और आत्म-क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया है। लेखिका का विचार है कि जीवन में विवाहित होने की बजाय स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान अधिक महत्वपूर्ण है।

"नारी का करना सम्मान
तभी बनेगा देश महान!"

श्रीमती मन्नू भंडारी :-

श्रीमती मन्नू भंडारी महिलाओं की चिंताओं को उजागर करने वाली सफल उपन्यासकारों में से एक थी। उन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं के मुद्दों पर कई उपन्यास समर्पित किए हैं। श्रीमती मन्नू भंडारी समाचार पत्रिकाओं के संपादक होने के साथ - साथ एक प्रसिद्ध उपन्यासकार और नाटककार रही हैं। उन्होंने "हंस पत्रिका" के संपादक श्री राजेंद्र यादव से शादी की। श्रीमती मन्नू भंडारी के जाने से हिन्दी साहित्य जगत में एक गहरी रिक्तता पैदा हो गई है।

श्रीमती मन्नू भंडारी का पहला उपन्यास 'मैं हार गयी' 1957 में प्रकाशित हुआ जो की हिंदी कहानी पत्रिका में एक लघु कहानी थी। इस कहानी को बाद में एक अत्यधिक लोकप्रिय और सफल नाटक के रूप में रूपांतरित किया गया और नई दिल्ली में सहित पूरे देश में प्रदर्शन किया गया था। 'मैं हार गयी' 12 कहानियों का संकलन है। उनमें से अधिकांश किसी न किसी महिला को नायक के रूप में परियोजना करते हैं। जीवन के प्रति महिलाओं के अलग- अलग दृष्टिकोण को व्यक्त करना, अर्थात् कुछ सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं और कुछ अपने दम पर खड़े होना चाहते हैं। उनमें से अधिकांश किसी न किसी महिला

को नायक के रूप में परियोजना करते हैं। जीवन के प्रति महिलाओं के अलग-अलग दृष्टिकोणों को व्यक्त करना, अर्थात कुछ सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं और कुछ अपने दम पर खड़े होना चाहते हैं।

उन्होंने उनके पति राजेन्द्र यादव के साथ मिलकर 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास को प्रकाशित किया था। एक इंच मुस्कान एक प्रायोगिक उपन्यास था, जिसमें एक पुरुष और महिला के बीच विवाह कि कहानी है, जिसमें यादव और भंडारी वैकल्पिक अध्यायों में प्रत्येक चरित्र के लिए लिखते हैं। कथानक भंडारी द्वारा तैयार किया गया था, और शीर्षक, यादव द्वारा। पुस्तक को शुरू में एक हिंदी पत्रिका, ज्ञानोदय में क्रमबद्ध किया गया था, और 1991 में एक पुस्तक के रूप में पुनः प्रकाशित किया गया था। ये कहानी आरती 'एक बार डांसर' और उसकी बेटी मुस्कान की है, जिसे आरती के पेशे की वजह से सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता है और वह उसके साथ रहना चाहती है। महिलाओं के साथ अकेलेपन की समस्या और वैवाहिक जीवन में आने वाली चुनौतियों को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है।

1971 में, श्रीमती मन्नू भंडारी ने 'आप का बंटी' शीर्षक से अपनी एक और पुस्तक और पहला एकल उपन्यास प्रकाशित किया था। इन्होंने नौ

साल के बच्चे बंटी की आंखों के माध्यम से एक विवाह के पतन को चित्रित किया, जिसके माता-पिता अंतत: तलाक लेते हैं और पुनर्विवाह करते हैं। पति-पत्नी के बीच के मनमुटाव का बच्चे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसे बंटी नाम के एक बच्चे के माध्यम से दर्शाया गया है। इस उपन्यास को हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में वर्णित किया गया है, और बाद में इसका व्यापक रूप से फ्रेंच, बंगाली और अंग्रेजी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

श्रीमती मन्नू भंडारी ने उपन्यास महाभोज 1979 में प्रकाशित किया। यह उपन्यास बिहार के दलितों के नरसंहार पर आधारित था, जिसमें से जमींदार के एक निजी समूह द्वारा दलित और अनुसूचित जाति समुदायों के 11 व्यक्तियों को पकड़ लिया गया, बांध दिया गया, उनकी हत्या कर दी गई और उनकी लाशें जला दी गई। महाभोज, जिसका अर्थ है 'भोज', इस घटना का काल्पनिक पुर्नकथन प्रस्तुत करता है, बिसु के माध्यम से, एक युवा दलित व्यक्ति जो पिछले नरसंहारों और हाशिए के दलित समुदायों पर हमलों से त्रस्त था। इन अपराधों के अपराधियों की जांच करने और उन्हें जवाबदेह ठहराने के बिसु के प्रयास का परिणाम उपन्यास में उनकी मृत्यु और

उनके पूरे गांव को डराना और नरसंहार करना है। यह उपन्यास भारत में जाति व्यवस्था और सामाजिक आर्थिक विषमताओं को दर्शाता है। यह दलित समुदाय पर होने वाले अत्याचारों को भी सामने लाता है। इस उपन्यास की दलित हाशिए और राजनीतिक भेद्यता की समझ के लिए प्रशंसा की है।

श्रीमती मन्नू भंडारी ने स्त्रियों का चित्रण विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में तत्कालीन समाज में मौजूद महिलाओं और महिलाओं के सामाजिक - नैतिक स्थितियों के व्यक्तिगत विवरणों को चित्रित किया है। 'चश्मे' 'घुटन' 'अभिनेता' 'एक कमजोर लड़की की कहानी' 'ईसा के घर इंसान', 'दिवार', 'बच्चे और बरसात', 'खोटे सिक्के', 'गीत का चुम्बन', 'जीती बाजी की हार' 'शमशान' 'मैं हार गयी' और 'दो कलाकार' आदि में सामाजिक परिवेश से संघर्ष करती नारीयाँ चित्रित है।

"सम्मान, प्रतिष्ठा और प्यार महिला सशक्तिकरण के है आधार!"

श्रीमती मृदुला गर्ग

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' 1975 में प्रकाशित किया था जिसमें यह चित्रित किया गया है कि पारंपरिक भारतीय समाज में नारियों और पुरुषों के बीच मानवीय स्वतंत्रता, विशेषकर महिलाओं और स्वतंत्रता के सवाल को हमेशा से नजरअंदाज करता आया है। मृदुला गर्ग का यह उपन्यास न केवल पारंपरिक है, बल्कि आधुनिकता के अव्यवस्थित वैचारिक ढांचों को जी रहा है। इस उपन्यास के माध्यम से यह सवाल भी उठता है कि स्त्री और पुरुष के बीच संबंध का आधार क्या है - प्रेम या स्वतंत्रता? श्रीमती मृदुला गर्ग के इस उपन्यास को भारत की वर्तमान पीढ़ी ने लोकप्रिय रूप से स्वीकार किया और सराहा।

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'वंशज' 1976 में प्रकाशित किया था। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि एक पीढ़ी का अंतर जो दो अलग-अलग पीढ़ियों के सदस्यों से संबंधित विश्वासों और व्यवहारों को अलग करता है। विशेष रूप से, एक पीढ़ी के अंतराल का उपयोग युवा पीढ़ी बनाम वृद्धों के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित विचारों, कार्यों और स्वाद में अंतर का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है।

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'वंशज' 1976 में प्रकाशित किया था। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि एक पीढ़ी का अंतर जो दो अलग-अलग पीढ़ियों के सदस्यों से संबंधित विश्वासों और व्यवहारों को अलग करता है। विशेष रूप से, एक पीढ़ी के अंतराल का उपयोग युवा पीढ़ी बनाम वृद्धों के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित विचारों, कार्यों और स्वाद में अंतर का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है।

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'चित्तकोबरा' 1979 में प्रकाशित किया था। यह कहानी आधुनिक जीवन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। इस उपन्यास के माध्यम से नारी के मन की दुविधाओं और संघर्षों का विवरण किया गया है। श्रीमती मृदुला गर्ग यह बतलाना चाहती हैं कि हम सभी नारीयों को अपने जीवन में कभी न कभी कई प्रकार के संघर्ष और कठिनाईयों के दौर से गुजरना पड़ता है, फिर चाहे वह क्षेत्र उसकी शिक्षा, नौकरी, शादी, उसके सम्मान के लिए हो। फिर भी आज हमारे देश में नारीयों का एक बड़ा भाग ऐसे ही कुछ संघर्षों और कठिनाईयों के कारण अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। आज भी यह देखा जाता है कि हमारे परिवारों में, समाज में, नौकरी में, व्यापार में और न जाने कई तरह की प्रतिकूल परिस्थितियाँ मौजूद हैं। इन संघर्षों और समस्याओं के बीच कुछ नारीयाँ ऐसी भी होती हैं जो हमेशा ही

महत्वाकांक्षी रहती है और अलग-अलग परिस्थितियों के चलते हुए अपनी पहचान को कायम बनाये रखती है।

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'अनित्य' 1980 में प्रकाशित किया था। स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष को चित्रित करने वाली एक महिला लेखिका द्वारा हिंदी में शायद एकमात्र उपन्यास, अनित्य स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और तुरंत बाद दो पीढ़ियों के व्यक्तियों की मानवीय दुर्दशा को चित्रित करता है। उपन्यास आम भारतीयों के दर्द को दर्ज करता है जो चौराहे से एक असंभावित अंत तक यात्रा करते हुए नियति के साथ अपने प्रयास को बनाए रखने में विफल रहे। पीड़ितों के खातों से हटकर, कार्य इस बात से संबंधित है कि कैसे उच्च नैतिक मानक आसानी से विश्वासघात में बदल जाते हैं जब स्व-हित को सिद्धांत के खिलाफ रखा जाता है। क्रांति की विफलता या विचारधाराओं की मृत्यु, हालांकि, संघर्ष के आकलन को अमान्य नहीं करती है, क्योंकि स्वतंत्रता की खोज अतीत की तरह वर्तमान की भी उतनी ही चिंता है। केंद्रिय चरित्र, अनित्य, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण है जिसने अपने आस-पास होने वाली घटनाओं के बारे में सभी भ्रमों से सफलता-पूर्वक छुटकारा पा लिया है और इसलिए वह

सच्चाई का सामना करने में सक्षम है। उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पहलू इसकी मजबूत, स्वतंत्र, दिमागी महिलाओं का चित्रण है। उपन्यास नैतिक प्रवाह की स्थिति में वयस्कों के लिए कई जटिल बाल पात्रों को तैयार करता है।

श्रीमती मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मैं और मैं' 1984 में प्रकाशित किया था। इस उपन्यास में लेखक एक महिला के शोषण को चित्रित करता है और इस समाज में उसके द्वारा किए जाने वाले संघर्षों पर प्रकाश डालता है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र में श्रीमती मृदुला गर्ग एक ओर गृहिणी के रूप में अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर रही है तो दूसरी ओर एक लेखिका के रूप में अपना लेखन कार्य कर रही है। उसे एक ऐसे व्यक्ति द्वारा मानसिक रूप से प्रताड़ित और आर्थिक रूप से प्रताड़ित किया गया, जिस पर वह सबसे ज्यादा भरोसा करती थी, जो बाद में चालाक निकला। वह इस उपन्यास में खूबसूरती से बयान करती है कि कैसे उसकी विचारधाराओं को मार दिया गया और महत्वकांक्षाओं का कत्ल कर दिया गया और अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने की उसकी निर्णय लेने की शक्ति को कम करके उसका शोषण किया गया।

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'कठगुलाब' 1996 में प्रकाशित किया था। कठगुलाब श्रीमती

मृदुला गर्ग द्वारा वर्तमान युग में लिखा गया एक प्रसिद्ध उपन्यास है। वह अपने उपन्यास के माध्यम से बताती है कि नितांत किसी भी व्यक्ति के लिए न तो पूरी तरह से व्यक्तिगत है और न ही सामाजिक, खासकर जब महिलाओं की बात आती है। शायद धारणा यह कहती है कि व्यक्ति के माध्यम से समाज को और समाज के माध्यम से व्यक्ति को जांचना होता है। उपन्यास आगे महिलाओं की कमजोरियों को दर्शाता है जो पुरुष प्रधान समाज में अधिक जटिल और चुनौतिपूर्ण होती जा रही है। अपने उपन्यास कठगुलाब में उन्होंने परिवार में महिलाओं के जीवन के संगत-असंगत पहलुओं का उल्लेख किया है जो या तो समाज में सामंजस्य या असामंजस्य लाता है जो अंतत: एक महिला के व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन को प्रभावित करता है। श्रीमती मृदुला गर्ग के उपन्यास को न तो यथार्थवादी लेखन के रूप में तौला जा सकता है और न ही आधुनिक युग में इसकी प्रशंसा की जा सकती है। यह उपन्यास एक व्यक्ति को अपने स्वयं के प्रतिबिंबों के साथ आत्मनिरीक्षण करने के लिए मजबूर करता है और हमें यह महसूस कराता है कि यदि वर्तमान महिला मुद्दों पर स्वस्थ समाज के लिए बाधाओं के रूप में गंभीरता से पुनर्विचार नहीं किया जाता है, तो उपन्यास

कठगुलाब विचारक नेता के ज्ञान का एक अकेला उदाहरण बन जाता है। इस उपन्यास में उल्लेख किया गया है कि लेखक द्वारा व्यक्त की गई विचारधारा एक आँधी की तरह किसी व्यक्ति को हिला देती है।

श्रीमती मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'मिलजुल मन' 2010 में प्रकाशित किया था। एक अशांत मन एक महिला के मानस का आह्वान करता है जो सच्ची खुशी और खुशी के मिथक के बीच के अंतर को महसूस करती है। श्रीमती मृदुला गर्ग ने इस उपन्यास के माध्यम से विश्लेषण किया है कि आत्मविश्वास वाली महिला अपनी भावनाओं को समझने में सक्षम होती है। वह अपने भावनात्मक संघर्षों के लिए अपने दोस्तों या परिवार को दोष नहीं देती। वह जानती है कि वह एकमात्र व्यक्ति है जो उसे सुधार सकती है। इस उपन्यास के माध्यम से दर्शाया गया है कि नारी खुद पर निर्भर रहने और महान चीजें करने की क्षमता रखती है जो न केवल उसके जीवन बल्कि परिवार में बाकी सभी को लाभ पहुँचाती है।

हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं ने विवाह, तलाक और महिला शिक्षा जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए अपनी जगह खुद बनाई है,

यानी ऐसे मुद्दे जो महिलाओं के जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। यद्यपि मुंशी प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, राजेंद्र सिंह बेदी, और भीष्म साहनी जैसे पुरुष लेखकों ने भारतीय समाज में महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं से निपटने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने महिलाओं को स्थान दिया जो उनकी अपनी सामाजिक दृष्टि के अनुसार कल्पना की गई थी। इसलिए, महिलाओं को जो बताया गया था वह पुरुष दृष्टिकोण से निर्दिष्ट स्थान थे। समय के साथ, हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं को जब ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ा, तो उन्होंने अपने लेखन में स्वतंत्र भारत में सांस्कृतिक परंपराओं और पितृसत्तात्मक शक्ति के आधुनिक उपयोगों पर सवाल उठाया। इनमें से कई महिलाओं ने उन शक्ति संरचनाओं को चुनौती दी है जो कुछ परंपराओं को भी अक्षुण्ण रखते हुए भी उन्हें अधीनस्थ स्थिति प्रदान करती हैं। वे सामाजिक समस्याओं से उपजी अपनी कुंठाओं और अपमानों पर चर्चा करते हैं जो उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। [92]

इस प्रकार रजनी पणिकर, कृष्णा सोबती आदि महिला लेखिकाएँ हैं जो समाज में महिलाओं की अधीनता के मुद्दे को उठाती हैं। कृष्णा सोबती महिलाओं पर थोपे गए पारंपरिक नैतिक मूल्यों का भी विरोध करती हैं। अपने अधिकांश उपन्यासों में, शिवानी महिलाओं के जीवन पर कई खिड़कियां खोलती हैं। वह दावा करती हैं कि परंपरा से बंधी, पुरुष-प्रभुत्व वाली व्यवस्था ने महिलाओं के व्यक्तित्व के लिए कोई जगह नहीं छोड़ती है। शिवानी का तर्क है कि एक महिला को देवी या 'सती' के रूप में माना जा सकता है, लेकिन वास्तव में उसकी स्थिति एक नौकर से अधिक नहीं है। उनके उपन्यासों से पता चलता है कि समकालीन परिवेश में भी, महिलाओं की स्थिति उन्नीसवीं शताब्दी की दमनकारी स्थितियों से अलग नहीं है, जिसने सामाजिक सुधारों की आवश्यकता का आग्रह किया था।

चौदह फेरे में, शिवानी, कर्नल, उसकी पत्नी और उनकी बेटी अहिल्या के माध्यम से, सामाजिक व्यवस्था को उजागर करती हैं। वह इस विचार को सामने रखती हैं कि पुरुष प्रधान भारतीय

समाज में, एक पुरुष एक महिला के साथ जैसा चाहे वैसा व्यवहार करने के अधिकारों को मानता है। अहिल्या के विरोध के बावजूद, उसके पिता कर्नल ने उसे उस व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर किया जिसे वह अपने पति के रूप में चुनती है। कर्नल का खुद मलिका सरकार के साथ अफेयर है, जिससे वह अपनी पत्नी को घर के सभी अधिकारों से वंचित कर देता है।
रतिविलाप में शिवानी एक विधवा की कठिनाइयों का चित्रण करती है। मायापुरी की शोभा पढ़ी-लिखी होने के बावजूद खुद को मुश्किलों के जाल में फंसा पाती है। असहाय और फंसी हुई, वह चुपचाप सहती है जब उसकी गरीबी, वर्ग और जाति उसे अपने प्रेमी सतीश से रोकती है, जो राज्यपाल की बेटी को अपनी दुल्हन के रूप में घर लाता है।

मायापुरी की शोभा की तरह, उषा प्रियंवदा की पचपन खंबे लाल दिवारेंं में नायक को उस आदमी से शादी करने से रोका जाता है जिसे वह प्यार करती है क्योंकि यह सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है। गरीबी और अपने परिवार की आर्थिक तंगी से परेशान होकर, वह एक छात्रावास की वार्डन की नौकरी करती है और लाल दीवारों और 55 खंभों

वाली इमारत में कैदी बन जाती है।

महिलाओं द्वारा लिखी गई कई कहानियाँ विवाह से संबंधित समस्याओं को सामने लाती है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था अपने पति के चयन के मामले में महिलाओं को बहुत कम विकल्प देती है। अधिकांश भाग के लिए, माता-पिता विवाह के बारे में निर्णय लेते हैं और शास्त्रों के अनुसार, कन्यादान (दुल्हन को देना) नामक एक अनुष्ठान माध्यम से दूल्हे के परिवार को लड़की उपहार में देते हैं, साथ में दहेज जो उसके पति के परिवार को प्रतिपूर्ति के रूप में कार्य करता है। दुर्भाग्य से, दहेज की प्रथा के परिणामस्वरूप महिलाओं का वस्तुकरण हुआ है और साथ ही साथ गरीबी के कारण बेमेल विवाहों को भी बढ़ावा मिला है। जबकि अमीर पुरुष अपने बेटों के लिए एक अनकही कीमत का दावा करते हैं, गरीब आर्थिक मजबूरी के कारण अपनी बेटियों को पुरुषों को बेचने के लिए मजबूर होते हैं। रजनी पणिकर अपने उपन्यासों में इस स्थिति के खिलाफ बोलती हैं। दहेज देने में अपने परिवार की असमर्थता के कारण, दो लड़कियाँ की नायिका अविवाहित रहती है। उसकी शादी की रात, प्रतिज्ञा नहीं ली जा

सकती क्योंकि भावी दूल्हे और उसके पिता ने यह जानकर समारोह को बाधित कर दिया कि कोई दहेज प्रदान नहीं किया जाएगा। असहाय, वह अपने परिवार की आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए नौकरी करती है। इस बीच, वह धनी श्री कनौदिया से मिलती है, जो उसे अपना निजी सचिव बनाना चाहता है। बदले में, वह धनी उसे एक कार, एक बंगला और अन्य सुविधाएं प्रदान करता है। वह उसकी शर्तों को तभी स्वीकार करती है जब उसे उसके प्रति अपने यौन इरादों का एहसास होता है। कनौदिया उसे अपने यौन शोषण के लिए एक महिला शरीर से ज्यादा कुछ नहीं मानते हैं। पणिकर का प्रयास हमें एक कठोर और परंपरा-बद्ध प्रणाली के प्रतिगामी पहलुओं के बारे में बताना है।

अरेंज्ड मैरिज की समस्याएं शिवानी के कैंनजा में प्रकट होती हैं, जिसकी नायिका, नंदी तिवारी को अपने चुने हुए पुरुष से शादी करने की अनुमति नहीं है, क्योंकि उसके पिता को बताया गया है कि उसकी कुंडली एक सुखद वैवाहिक भविष्य की भविष्यवाणी नहीं करती है।

मृणाल पाण्डेय की लघुकथा "हम सफर" में विधवापन द्वारा जटिल दहेज की समस्या पर विचार किया गया है। एक युवा विधवा, निर्मला

के विचारों के माध्यम से, ट्रेन के डिब्बे में यात्रा करते हुए, पांडे उस कड़वी सच्चाई पर रोशनी डालती है, जिसमें उसका विधवापन उसके पास जो कुछ भी बचा है, उसका स्वाद लेने से इनकार करता है। निर्मला याद करती है कि उनके पति की मृत्यु के बाद, उनकी रंगीन साड़ी और ब्लाउज, उनकी चांदी की पायल और नथ, ये सब धीरे-धीरे उनकी ननद के बक्सों में आ गए थे। इस प्रकार कहानी के माध्यम से पांडे मौजूदा सामाजिक संरचना को चुनौती देने की कोशिश करते हैं जो एक विधवा की दुनिया को प्रभावित कर डालती है। अपने दैनिक जीवन में महिलाओं पर होने वाली हिंसा का सामना करने के लिए, पांडे ने निर्मल द्वारा अपने बेटे की अपमानजनक पिटाई में व्यक्त की गई हिंसा की भाषा का परिचय दिया। इस कार्रवाई में जो व्यक्त किया गया है वह यह है कि एक शांत और अहिंसक, निष्क्रिय रवैया जो समाज एक "सदाचारी" महिला से अपेक्षा करता है, पुरुष-प्रधान संरचनाओं के माध्यम से महिलाओं पर होने वाली हिंसा का सामना करने के लिए अपर्याप्त है।

काफी हद तक महिलाओं की इच्छाओं को अपने जीवन, विशेष रूप से विवाह को आकार देने की इच्छा को प्रकट करती है, जो कि मौजूद यहाँ कि सामाजिक संस्थाएँ प्रदान नहीं करती हैं। यद्यपि मन्नू भंडारी विवाह को एक आवश्यकता के रूप में देखती है, वह असफल विवाह में तलाक के विकल्प की सिफारिश करती है। हालांकि, उसी समय, वह आप का बंटी (1971) में एक तलाकशुदा महिला होने की स्थिति से जुड़ी सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालती है।

पणिकर, शिवानी, मन्नू भंडारी और मृणाल पांडे की अधिकांश कहानियाँ सामाजिक और आर्थिक समानता प्राप्त करने के लिए महिला शिक्षा की आवश्यकता को दृढ़ता से व्यक्त करती है। यही कारण है कि इनकी नायिकाएँ प्राय: शिक्षित स्त्रियाँ ही होती हैं। दो लड़कियों की नायिका अपनी शिक्षा के कारण पेशेवर रूप से स्वस्थ हैं। इसी तरह, कैंजा के नंदी तिवारी मेडिकल की डिग्री हासिल कर सिस्टम से लड़ते हैं, जिससे वह एक सफल डॉक्टर बन जाती हैं। उसकी शिक्षा उसे एक आत्मविश्वास और आर्थिक स्थिरता

प्रदान करती है जो उसे दमनकारी समाज का सामना करने में सक्षम बनाती है।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य की महिला लेखिकाओं ने सामाजिक ढाँचे पर सवाल उठाने में अत्यंत प्रगतिशील सिद्ध हुई हैं। इन महिलाओं द्वारा लिखी गई कहानियां पुराने मुद्दों को पेश करती हैं, लेकिन नए जोर और नए झुकाव के साथ।

"शिक्षित नारी संतुष्ट परिवार"

सीकिंग लाइक ए फेमिनिस्ट, निवेदिता मेनन

श्रीमती निवेदिता मेनन ने इस किताब के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि एक किताब ही नारीवाद को स्पष्ट करने के लिए सर्व प्रथम स्रोत था। इन्होने अपनी अवधारणाओं को इस प्रकार से समझाया है जो की अधिकांश शैक्षणिक कार्यों में बहुत दुर्लभ है। श्रीमती निवेदिता मेनन ने अपने किताब के माध्यम से महिलाओं के बारे में ये कहा है कि महिलाओं ने परंपरागत रूप से समाज में अपने अधिकारों और स्थिति के लिए लड़ाई लड़ी है। उन्होंने बार-बार समानता के लिए जोर दिया है ताकि वे ठीक पुरुषों के बराबर जीवन जी सकें। फिर भी, वे आजादी के बाद भी लड़ रहे हैं। अगर हम आज के परिदृश्य की बात करें तो बहुत सी महिलाएं अभी भी लैंगिक भेदभाव, यौन शोषण और उत्पीड़न, शिक्षा बाल विवाह और न जाने क्या-क्या समस्याओं का सामना कर रही हैं?

मेरे दोस्त, मेरे दुश्मन इस्मत चुगताई

बदायूं हाल ही में भारत के तेजी से बढ़ते मीडिया चक्रों में से एक के बीच में था, क्योंकि

यह वह जगत है जहां दो किशोर लड़कियों के शव एक पेड़ से लटके पाए गए थे। गैर-काल्पनिक लेखन का यह संग्रह - जिसमें आत्मकथात्मक कार्य और साहित्यिक आलोचना दोनों शामिल हैं - इतिहास में सबसे आकर्षक और पथ-प्रदर्शक भारतीय महिला लेखकों में से एक के जीवन की एक झलक है। भारत में महिलाओं को देवियों का दर्जा दिया जाता है। हालाँकि, वे जिन कठिनाइयों का सामना करते हैं, वे केवल इस विचार के विरुद्ध को दर्शाता है। एक ओर लोग उन्हें देवी के रूप में पूजते हैं, वे केवल इस विचार के विरुद्ध को दर्शाता है। एक ओर लोग उन्हें देवी के रूप में पूजते हैं, वे केवल इस विचार के विरुद्ध को दर्शाता है। एक ओर लोग उन्हें देवी के रूप में पूजते हैं वहीं दूसरी ओर वे उनके साथ निर्दयतापूर्वक दुर्व्यवहार करते हैं और उनके बारे में कम सोचते हैं। जब लैंगिक असमानता की बात आती है, तो कई माता-पिता एक लड़की के बजाय एक लड़के की कामना करते हैं, क्योंकि उनकी तथाकथित "मानसिकता" में लड़के अपनी पीढ़ी को आगे बढ़ाएंगे।

क्योंकि आवारा, शिल्पा फड़के, समीरा और शिल्पा रानाडे

यह समकालीन शहरी सार्वजनिक स्थानों और

लिंग के बारे में खूबसूरती से लिखी गई गैर-कथा का काम है। इसका मूल आधार भारत में दिसंबर 2012 के विरोध प्रदर्शनों से उभरी केंद्रीय मांग के साथ मेल खाता है, जो शायद "बैखौफ आजादी" के नारे में व्यक्त किया गया है- भय से मुक्ति। यह पुस्तक उन तरीकों की पड़ताल करती है जिनके द्वारा महिलाएं कहीं भी और किसी भी समय आवारागर्दी करने में सक्षम हो सकती हैं। आवारा क्यों? अब उन महिलाओं के लिए एक सतत अभियान है जो स्वतंत्रता के अपने अधिकार का दावा करती हैं। महिलाओं को अक्सर समाज के डर से कठिन परिस्थितियों में चुप रहने के लिए मजबूर किया जाता है। उसे इस यातना को सहना पड़ता है, जो उसके शारीरिक और मानसिक कष्ट का कारण बनती है, और अंत में, वह महिलाओं की स्थिति हमेशा पुरुषों की तुलना में कम देखी गई है। यदि किसी घर में लड़की और लड़का पैदा हो जाते हैं, तो उसके माता-पिता अपना पैसा बेटे की शिक्षा पर खर्च करेंगे, न की बेटी की शिक्षा पर।

मेरी कहानी, कमला दास

मलयालम और अंग्रेजी में गद्य और कविता की प्रख्यात लेखिका और नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित, कमला दास ने 1973 में अपने जीवन की कहानी प्रकाशित की। कई महत्वपूर्ण

मुद्दे जो आज भी हर जगह महिलाओं के जीवन के केंद्र में हैं। श्रीमती कमला दास अपनी कहानियों में यह कहती हैं कि महिलाओं को अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिलाओं की चिंता पैसा, परिवार और स्वास्थ्य है। महिलाओं को कार्यस्थल पर कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिलाओं को लैंगिक भूमिकाओं और घरेलू हिंसा से संबंधित चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। महिलाओं के मुद्दों के लिए खड़ा होना और इन चुनौतियों का समाधान करना महत्वपूर्ण है।

ए लाइफ लेस ऑर्डिनरी, बेबी हैल्दर

बेबी हलदर की कहानी असाधारण रूप से असाधारण है क्योंकि घरेलू कामगारों की वास्तविकताएं मध्य और उच्च वर्ग के लोगों की रोजमर्रा की चेतना में इतनी अदृश्य है। हलदर ने घरेलू हिंसा और अपनी बहन की हत्या सहित, 25 साल की उम्र में तीन बच्चों की अकेली माँ, नई दिल्ली आने के लिए भारी बाधाओं से जूझते हुए संघर्ष किया। उनकी आत्मकथा, एक घरेलू कामगार के रूप में उनकी नौकरी के साथ लिखी गई, एक बेस्टसेलर है और इक्कीस भाषाओं में अनुवाद किया गया था। अपमानजनक रिश्तों में हमेशा शक्ति और नियंत्रण का असंतुलन शामिल होता है। एक दुराचारी साथी को नियंत्रित करने के लिए भयभीत करने वाले, हानिकारक शब्दों

और व्यवहारों का उपयोग करता है।

लेखन जाति / लेखन, शांताबाई यानी मुक्ता सर्वगोड़, शांताबाई कांबले, बेबी कांबले, कुमुद पांवडे, उर्मिला पवार, जानाबाई गिर्हे, विमल मोरे

यह महाराष्ट्र में दलित महिला लेखिकाओं द्वारा आठ सुंदर साक्ष्यों का संग्रह है, प्रत्येक लेखक द्वारा बड़े ग्रंथों से निकाला और अनुवादित किया गया है। ये जीवन कथाएँ ब्राह्मणवादी भारतीय नारीवाद के विमर्शों में दलित महिलाओं के जीवन, अनुभवों और चिंताओं की अदृश्यता का प्रतिकार करती है। लेखक अपने समृद्ध स्तरित और विविध लेखन को प्रस्तुत करने में दलित महिलाओं के अनुभव के प्रतीकवाद और समरूपता का विरोध करते हैं। ये और अन्य दलित जीवन आख्यान उन सभी के लिए अवश्य पढ़े जाने चाहिए जो भारत में महिलाओं के मुद्दों के साथ किसी भी सार्थक तरीके से जुड़ने की उम्मीद करते हैं, और जाति और लिंग के बीच के महत्वपूर्ण अंतर को समझते हैं। यह संग्रह स्वर्गीय शर्मिला रेगे द्वारा पेश किया गया है।

शांति की खुशबू, इरोम शर्मिला

एक दशक से अधिक समय से अनशन पर बैठी एक महिला क्या सोचती है? सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध के लिए इरोम शर्मिला को जबरन खिलाया गया, खुद को मारने की कोशिश करने का आरोप लगाया गया, और जेल में डाल दिया गया। दुनिया की सबसे लंबी भूख हड़ताल का उनका धीरज उनकी बेहतरीन कविता, कोमल और दृढ़ संकल्प में एक ही बार में झलकता है। श्रीमती इरोम शर्मिला यह कहती है कि महिलाओं को समाज में एक बहुपक्षीय भूमिका निभानी होती है, यानी परिवार की रोटी कमाने वाली के रूप में, देखभाल करने वाली के रूप में, एक माँ, पत्नी, बेटी के रूप में और समाज के लिए एक सेवा प्रदाता के रूप में। इस तथ्य के बावजूद देश के विकास में महिलाओं का योगदान बराबर है, लेकिन फिर भी लिंग के आधार पर भेदभाव किया जाता है। भारत में महिलाओं को उनके सम्मान के मौलिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया है और लैंगिक समानता के सवाल के साथ अकेला छोड़ दिया गया है।

पाठ ३

अनुसंधान के उद्देश्य :

क) मृदुला गर्ग द्वारा उठाए गए महिला मुद्दों को जानने के लिए शोधार्थी जिज्ञासु है।

ख) शोधार्थी इस विषय पर अध्ययन करने के लिए विशेष रूप से इच्छुक हैं क्योंकि इस विषय पर कोई शोध उपलब्ध नहीं है और वे इस लोकप्रिय आधुनिक लेखक की नई अंतर्दृष्टि का पता लगाना चाहते हैं।

ग) शोधार्थी इस अध्ययन को आगे बढ़ाने में रुचि रखते हैं क्योंकि मृदुला गर्ग साक्षात्कार के लिए उपलब्ध हैं और उनकी पहली राय और टिप्पणियों को पहली जानकारी के रूप में लिया जा सकता है, जो इस अध्ययन में दुर्लभ और अनूठी पद्धति होगी।

घ) यह शोध भारत में महिलाओं के मुद्दों पर आधुनिक लेखक की सोच और जनसंख्या की बदलती धारणा को समझने के लिए ज्ञान जगत में योगदान देगा। शोधार्थी भारत में महिला सशक्तिकरण के संबंध में वर्तमान उपलब्ध विधानों और अनुभवजन्य अध्ययनों के माध्यम से इसकी प्रभावशीलता के निष्कर्षों और समाचार पत्रों और पत्रिकाओं

आदि के माध्यम से उपलब्ध अन्य साक्ष्यों के माध्यम से भी देखेंगे ।

ङ) मृदुला गर्ग की कहानी संग्रहों में भारतीय परिवेश में नारी जीवन के बहुरंगी रूपों का चित्रण हुआ है ।

१. पारिवारिक विघटन की समस्या ।
२. कामकाजी नारी की समस्या ।
३. अशिक्षित तथा शिक्षित नारी की समस्या ।
४. घुटन और अकेलेपन की समस्या ।
५. प्रौढ़ अविवाहिता की समस्या ।
६. कन्या जन्म की समस्या ।
७. निसंतान नारी की समस्या ।
८. दहेज की समस्या ।
९. वैद्यकिय सुविधाओं के अभाव की समस्या ।
१०. असफल प्रेम की समस्या ।

पाठ ४
अनुसंधान क्रियाविधि :

क) शोधकर्ता इस शोध को करने के लिए वैज्ञानिक तरीकों का पालन करेगा ।

ख) चूंकि यह मृदुला गर्ग की कहानियों और उपन्यासों में नारी चेतना का एक अध्ययन है । शोधकर्ता मुख्य रूप से मृदुला गर्ग के कार्यों पर निर्भर करेगा ।

ग) अत: शोधकर्ता मुख्य रूप से मृदुला गर्ग द्वारा किये गए 7 उपन्यास पर निर्भर करेगा ।

१. उसके हिस्से की धूप
२. चित्तकोबरा
३. अनित्य
४. मैं और मैं
५. कठ गुलाब
६. मिलजुल मन
७. वसु का कुटुम

घ) मृदुला गर्ग की उपलब्ध पुस्तकों की समीक्षा और मृदुला गर्ग के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार के संयोजन के साथ यह एक अनुभवजन्य अध्ययन है।

ङ) प्रस्तुतीकरण के उद्देश्य से शोधकर्ता देवनागरी फोन्ट के साथ-साथ एमएस वर्ड और एमएस पावर प्वाइंट का उपयोग करेगा ।

साक्षात्कार

श्रीमती मृदुला गर्ग के अनुसार महिला मुद्दों के संबंध में प्रत्यक्ष राय और अनुभव प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता श्रीमती मृदुला गर्ग के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार करेंगे ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. " अग्नि ऑनलाइन : लेखिका मृदुला गर्ग " ।
मूल से 8 जुलाई 2018 को पुरालेखित ।
16 जनवरी 2011 को लिया गया ।

2. आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस : अनित्य : मृदुला गर्ग

3. " प्यार में महिलाएं कहीं ज्यादा निडर होती हैं: मृदुला गर्ग ", टाइम्स ऑफ इंडिया । 3 मई 2018 । 21 जून 2021 को लिया गया ।

4. दफ्तौर, स्वाति (25 दिसंबर 2013) । "स्वाद की बात ", हिन्दू 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त ।

5. "विशेष: मृदुला गर्ग द्वारा 'मैं कोरोना के समय में खुद से बात करती हूं ", टाइम्स ऑफ इंडिया । 1 अगस्त 2020 । 21 जून 2021 को लिया गया ।

6. हमें सलाम, जिया (16 जनवरी 2010)। "मैं एक कुंवारा हूं"। हिन्दू। 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त।

7. त्रिवेदी, हरीश (21 जुलाई 2018)। "अब शांत हो गया, सारा जुनून बीत गया: मृदुला गर्ग द्वारा 'द लास्ट ईमेल : एक नॉवेल"। हिन्दू। 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त।

8. जोशी, के. (16 फरवरी 2010)। "मैं एक कुंवारा हूँ"। हिन्दू। 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त।

9. त्रिवेदी, हरीश (21 जुलाई 2018)। "अब शांत हो गया, सारा जुनून बीत गया: मृदुला गर्ग द्वारा 'द लास्ट ईमेल : एक नॉवेल"। हिन्दू। 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त।

10. जोशी, के. (16 फरवरी 2010)। "विकल्पों का प्रश्न"। हिन्दू। 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त।

11. शुक्ला, अंकिता (21 दिसंबर 2016)। "युगों के माध्यम से साहित्य में महिलाओं का चित्रण"। टाइम्स ऑफ इंडिया। 21 जून 2021 को पुन: प्राप्त।

12. "अनुवाद में मिला"। नई

13. "सतत बहस के लिए"। www.phalanx.in। 16 फरवरी 2021 को पुनः प्राप्त।

14. "कवि साहित्य अकादमी पुरस्कार 2013 पर हावी" 19 दिसंबर 2013 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत। साहित्य अकादमी। 18 दिसबंर 2013। 18 दिसंबर 2013 को लिया गया।

15. "अग्नि शेखर, मृदुला को मिलेगा मीरा स्मृति सम्मान"। ट्रिब्यून इंडिया। ट्रिब्यून समाचार सेवा। 15 नवंबर 2016। 21 जून 2021 को लिया गया।

16. प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण - 2012

16.क) प्रभा खेतान - पीली आंधी, लोक भारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण - 2011

17. मृदुला गर्ग - कठगुलाब, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोधी रोड, नई दिल्ली, संस्करण - 2009

18. मृदुला गर्ग - उसके हिस्से की धूप, अक्षर प्रकाशन प्रा॰ लि॰, 2/36 अंसारी - 1975

19. मृदुला गर्ग - शहर के नाम भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोधी रोड, नई दिल्ली, संस्करण - 2009

20 मृदुला गर्ग - दुनिया का कायदा इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन के - 71, कृष्णनगर, दिल्ली - 51 संस्करण - 1983

21 मृदुला गर्ग - कितनी कैदें, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन के 71 कृष्णनगर, दिल्ली - 51, संस्करण - 1982

22. मृदुला गर्ग - डैफोडिल जल रहे हैं, अक्षर प्रकाशन प्रा॰ लि॰, 2/36 अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 06, संस्करण - 1978

23. मृदुला गर्ग - चर्चित कहानियाँ, समसामयिक प्रकाशन 3320-21 जटवाडा, नेता जी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली 02, संस्करण - 1993

24. मन्नू भण्डारी - आपका बंटी (1971), अक्षर प्रकाशन प्रा॰लि॰, 2 / 36 अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 06, संस्करण - 2008

25. मन्नू भण्डारी - महाभोज (1979) राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, संस्करण - 2006

26 मन्नू भण्डारी - मैं हार गई (1957), अक्षर प्रकाशन प्रा॰लि॰, 2 / 36 अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 06, संस्करण - 2001

27. मन्नू भण्डारी - यही सच है (1966), अक्षर प्रकाशन प्रा॰लि॰ 2 / 36 अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 06, संस्करण - 1983

28. मन्नू भण्डारी - एक प्लेट सैलाब (1968) अक्षर प्रकाशन प्रा॰लि॰, 2 / 36 अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 06 संस्करण - 1983

29. त्रिशंकु (1978), नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नेहरू भवन, 5 इस्टीट्यूमन्नू भण्डारी - शनल एरिया फेज - 2 वंसत कुंज, नई दिल्ली, संस्करण - 2004

30. मन्नू भण्डारी - मन्नू भण्डारी की श्रेष्ठ कहानियां, श्रम जीवी प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण - 1957

31. डॉ॰ जगदीश्वर चतुर्वेदी - स्त्रीवादी साहित्य विमर्श - पृ॰ 115-116

32. डॉ॰ उर्मिला गुप्ता - हिन्दी कथा साहित्य के विकास के विकास में महिलाओं का योग पृ॰ 134

33. बिन्दु अग्रवाल - नारी विकास युग की अनिवार्य शर्त है - साप्ताहिक हिन्दु जन॰ - 1967 - पृ॰ 40

34. डॉ॰ उर्मिला गुप्ता - हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग - पृ॰ 10

35. डॉ॰ सुरेश सिन्हा - हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना - पृ॰ २०-२२

36. डॉ॰ उर्मिला गुप्ता - हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं योगदान - पृ॰ 134

37. डॉ॰ उर्मिला गुप्ता - हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग - पृ॰ 381

38. डॉ॰ मुदिता चन्द्रा - आधुनिक हिन्दी कथा - साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप - पृ॰ 433

39. यही सच है : मन्नु भंडारी, पृ॰ 76

40. आपका बंटी : मन्नु भंडारी, पृ॰ 39

41. हिन्दी साहित्य में स्त्री छवि, साप्ताहिक हिंदुस्तान- ३ सितम्बर १९८९ अंक २९ : मृदुला गर्ग

42. हिन्दी साहित्य में स्त्री छवि, साप्ताहिक हिंदुस्तान- ३ सितम्बर १९८९ अंक २७ : मृदुला गर्ग

43. बात एक औरत की : कृष्णा अग्निहोत्री - पृ॰ 69

44. समकालीन महिला लेखन डॉ॰ ओमप्रकाश शर्मा, पृ॰ 152

45. कठगुलाब मृदुला गर्ग, पृ॰ 175

46. बोलने वाली औरत - ममता कालिया, पृ॰ 8

47. दुनिया का कायदा : मृदुला गर्ग - पृ॰ 85